



## أحمد إبراهيم أحمد

خبير سياحي  
له ثلاث إصدارات  
"سندريلا دافينشي"  
"رسائل لم يكتبها جبران"  
"شهقة عشق"

## النوارس...

لم تعد.. تحلق.  
ورياح الشمال..  
لم تعد..  
تأتيني..  
بأخبارها.  
محاصر أنا..  
ما بين..  
ضفتين..  
وشتاء.  
شتاء..  
لا ينتظر.  
ما للطيور..  
من ظلال..  
لتختبي.

الغد..  
بات كالأمس  
كلاهما..  
لا يأتي..  
في مواعده.  
وسجين الحب..  
كسجين الرأي!!  
كلاهما..  
غرقى.  
لا جدوى للوقت.  
والسجان..  
أودعهما..  
في جب..  
النسيان.  
لربما..  
يغمرهما..  
سيل..  
أو..  
طوفان.  
فلا يعودان..  
للتحليق..  
بسمائه..  
مجددا.